मासिक
इसलाहे समाज
जनवरी **2018** वर्ष **29** अंक **01**

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् ह़क़्क़

❑	वार्षिक राशि	**100** रुपये
❑	प्रति कापी	**10** रुपये
❑	टोटल पेज	**28**

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट **2035** क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल **4116**, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक्क़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	उपदेश	**2**
2.	हमारा कर्तव्य	**4**
3.	राष्ट्रीय सदभावना को बढ़ावा देने में इमामों की भूमिका	**6**
4.	आत्मघाती हमलों के बारे में इमाम मुहम्मद बिन सालेह अल उसैमीन रह० का जवाब	**9**
5.	प्रेस रिलीज़	**13**
6.	नाप तौल में कमी का परिणाम	**15**
7.	राष्ट्रीय सदभावना को बढ़ावा देने में प्रचारकों एवं सुधारकों की भूमिका	**16**
8.	प्रेस रिलीज़	**19**
9.	मानव अधिकार में समता	**21**
10.	हज़रत मुहम्मद स० ने फ़रमाया	**24**
11.	जमाअती ख़बरें	**25**
12.	इस दुनिया से सबको जाना है	**26**
13.	दो तरह के इंसान	**27**
14.	३४वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स	**28**

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com
अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है
वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

हमारा कर्तव्य

नौशाद अहमद

मानव जीवन में कर्तव्य की बड़ी अहमियत है, कुछ कर्तव्यों का संबन्ध अल्लाह की उपासना से है और कुछ कर्तव्यों का संबन्ध इन्सानों से है। दोनों कर्तव्यों की अहमियत अपनी जगह पर सर्वमान्य है, अर्थात दोनों को पूरा करना आवश्यक है।

अल्लाह की उपासना का कर्तव्य यह है कि उसने अपने बन्दों को उपासना के लिये जो आदेश और सिद्धांत दिये हैं उनके अनुसार ईश्वर की उपासना की जाये। कुरआन में ईश्वर फरमाता है ''मैंने इन्सानों और जिन्नातों को केवल अपनी उपासना के लिये पैदा किया है'' कुरआन की इस आयत में इन्सान और जिन्नात के पैदा करने का उददेश्य बता दिया गया है, इस दुनिया में इन्सान केवल यूं ही रहने के लिये नहीं आया है बल्कि उसके ऊपर एक बड़ी जिम्मेदारी है जिसको निभाना अत्यन्त आवश्यक है, यह कर्तव्य अल्लाह की उपासना से संबन्ध रखता है। ईश्वर यह देखना चाहता है कि इन्सान अपने मक़सद से भटक तो नहीं रहा है, अगर हमने इन्सान को अक्ल दी है तो क्या वह इस का सहीह इस्तेमाल कर रहा है, अक्ल का सहीह इस्तेमाल यह है कि अल्लाह ने अपने बन्दों को जो आदेश दे दिया है वह निभा रहा है कि नहीं।

ईश्वर ने हर इन्सान का रास्ता तय कर दिया है अब इन्सान का यह कर्तव्य बनता है कि वह उस रास्ते को अपनाये जो ईश्वर ने इन्सान के लिये तय कर दिया है। इस्लाम ने हर इन्सान के लिये सच्चाई का रास्ता स्पष्ट रूप से बयान कर दिया है जिस का पालन करना हम तमाम इन्सानों का कर्तव्य है।

एक कर्तव्य बन्दों का बन्दों के लिये है एक इन्सान का दूसरे इन्सानों के लिये है, बन्दों के लिये कर्तव्य को निभाना भी उपासना का एक हिस्सा है इसको एक मिसाल से यूं समझा जा सकता है कि थोड़ी देर के लिये यह मान लिया जाये कि कोई असहाय व्यक्ति कहीं किसी सड़क खेत खल्यान में बीमारी की वजह से गिर पड़ा है वह उठना चाहता है अपने आप को संभालना चाहता है लेकिन वह इतना असहाय हो चुका है कि वह स्वयं से उठने की शक्ति नहीं रखता है, अब ऐसी हालत में हम तमाम लोगों का यह कर्तव्य है कि हम उस असहाय व्यक्ति को सहारा दें, उसको बेकसी की हालत से निकाल कर लायें, उसकी यथाशक्ति सहायता करें, यह इन्सान के कर्तव्य का एक भाग है।

मां बाप की भी मिसाल हमारे सामने है मां बाप अपने बच्चों के लालन पालन और पढ़ाने लिखाने और बड़ा करने में अपने पूरे जीवन को समर्पित कर देते हैं एक वक्त ऐसा भी आता है कि बूढ़े हो जाने के सबब हमारे मोहताज हो जाते हैं, अब ऐसे में बच्चों का कर्तव्य बनता है कि अपने मां बाप को सहारा दें, उनके जीवन को सुखमय बनाने के लिये वैसे ही प्रयास करें जिस तरह उन्होंने हम को पालने पोसने में संघर्ष किया था यह इन्सान के जीवन में बहुत बड़ा कर्तव्य है। अगर हर

इन्सान अपने इस कर्तव्य को निभनाना शुरू कर दें तो फिर ओल्ड ऐज होम की आवश्यकता खत्म हो जायेगी और इन्सान एक बड़ा कर्तव्य निभा कर अपने ईश्वर का प्रिय बन जायेगा।

सवाल यह है कि क्या हम इस कर्तव्य को निभा रहे हैं?

बीमारी का भय

इस संसार में जो भी इन्सान आया है उसको एक न एक दिन मरना है, और मरने के बाद उसे इस जैसी दुनिया नसीब नहीं होगी बल्कि एक दूसरी दुनिया होगी जहां से कोई भी दोबारा वापस नहीं आयेगा। मरने के बाद इन्सान को उसके कर्म के अनुसार बदला मिलेगा, यह बदला देने के लिये ईश्वर ने स्वर्ग और नर्क बनाया है। यह दोनों स्थान सत्कर्म और कुकर्म का पैमाना हैं, जिस इन्सान के कर्म अच्छे होंगे वह स्वर्ग में जायेगा और जिसके कर्म अच्छे नहीं होंगे वह नरक में जायेगा।

यह दुनिया इन्सान के लिये परीक्षास्थल है, इस दुनिया में जो भी इन्सान आया है उसकी परीक्षा हो रही है, जो इस परीक्षा में पास होगा वहीं इनसान परलय के दिन भी पास माना जायेगा। इस परीक्षा का संबन्ध अच्छे कर्मों से है, परलय के दिन इन्सान के कर्म को सच्चाई की तराजू पर तौला जायेगा, वहां पर किसी प्रकार की कोई नाइन्साफी नहीं होगी, हर इन्सान के एक एक कर्म को सहीह और गलत के तराजू पर तौल दिया जयोगा, संसार के जीवन में नाप तौल करते समय अन्तर तो हो जाता है लेकिन परलय के दिन कण भर का भी अन्तर नहीं होगा कोई यह नहीं कह सकेगा कि मेरे साथ अन्याय हुआ है। कुरआन में अल्लाह फरमाता है ''अल्लाह कण भर भी किसी पर अत्याचार नहीं करता'' (सूरे निसा-४०)

जो लोग ईश्वर की उपासना करते हैं उनका स्थान ईश्वर के नजदीक प्रशंसनीय और प्रिय है, ऐसा इन्सान अल्लाह के नजदीक प्रिय बन्दा माना जायेगा क्योंकि इन्सान को जिस मक़सद के लिये इस दुनिया में भेजा गया है वह उपासना है जिसके द्वारा नेक बन्दा अपने पालनहार का शुक्रिया अदा करता है, उसकी नेमतों का आभार व्यक्त करता है, इस तरह के इन्सान के लिये परलय में स्वर्ग की नेमत मिलेगी।

इसके विपरीत एक ऐसा इन्सान जिसने अपने जीवन को यूं ही बेकार कामों में गुज़ार दिया, गलत कर्मों में लगा रहा उसने अपने पालनहार की उपासना नहीं की तो ऐसे लोगों का ठिकाना नरक है। यह कितने खेद और अफसोस की बात है कि आज का इन्सान दुनियावी कामों में इतना व्यस्त हो गया है इतना गाफिल हो गया है कि वह अपने पालनहार के बताये गये उददेश्यों को भी भूल गया है।

हमारा पालनहार कितना कृपाशील और दयावान है कि उसने अपने बन्दों को साफ साफ बता है कि कौन सा रास्ता उसे स्वर्ग की तरफ ले जाता है और कौन सा रास्ता उसे नरक की तरफ ले जाता है।

एक मरीज जब किसी डाक्टर के पास जाता है तो डाक्टर उसको दवा देने के साथ परहेज करने का भी मश्वरा देता है और हम लोग उस डाक्टर के निर्देश के अनुसार बीमारी के भय से अमल करते हैं लकिन हमारे लिये यह कितने दुर्भाग्य (बदकिस्मती) की बात है कि ईश्वर के आदेशों को मानने के लिये तैयार नहीं हैं।

❑❑❑

राष्ट्रीय सदभावना को बढ़ावा देने में इमामों की भूमिका

मुहम्मद खुर्शीद आलम मदनी

इस्लाम अम्न व शान्ति का स्रोत और इन्सानों के बीच प्रेम उदारता और सौहार्द एवं भलाई को बढ़ावा देने वाला धर्म है। यह दयालू अल्लाह का प्रिय धर्म है जो अगर एक तरफ बन्दों को असल पूज्य (माअबूद) से जोड़ता है तो दूसरी तरफ इन्सानों के बीच प्रेम, भ्रातत्व (भाईचारा) का वातावरण स्थापित करता है।

इस्लाम धर्म संपूर्ण मानवता में समता का केवल पक्षधर ही नहीं बल्कि इसका ध्वजावाहक भी है। यह मान सम्मान को हर इन्सान का प्राकृतिक अधिकार मानता है और किसी के भी सम्मान को क्षति पहुंचाने की अनुमति नहीं देता और किसी इन्सान के जान व माल से खेलवाड़ की इजाज़त नहीं देता, इसके साथ ही इस हकीकत को पूरी स्पष्टता के साथ पूरी दुनिया पर उजागर करता है कि जोर बरदस्ती से किसी पर धर्म को थोपा नहीं जा सकता हर व्यक्ति को पूरी आज़ादी और अधिकार है कि वह अपने लिये जिस आस्था और धर्म को चाहे पसन्द करे। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''धर्म के मामले में कोई जोर जबरदस्ती नहीं है''।

इस्लाम धर्म एक विश्व्यापी धर्म है, मानव सम्मान और उदारता वाला धर्म है इसलिये यह मानवता की बुनियाद पर अन्य धर्मों के मानने वालों के साथ सदव्यवहार करने का पाबन्द है यह वह धर्म है जो इन्सान की हैसियत से हर एक को सम्मानित समझता और मानवता के उच्च मूल्यों की हर हाल में सुरक्षा करता है। इस्लाम धर्म अत्याचार आतंकवाद और उपद्रव का सख्त विरोधी है। चाहे इन अमानवीय गतिविधियों का स्रोत मुसलमानों का दल हो या अन्य लोगों का और इस्लाम ने आंकवाद और इन्सानी प्राण को हलाक करने वालों के लिये कड़ा कानून बनाया है जिसकी मिसाल किसी भी सांसारिक कानून में मिलनी मश्किल है इसका मकसद यह है कि शान्ति पूर्ण नागरिक अम्न व सुख के साथ जीवन यापन करसकें और बुरे इन्सानों को उनकी बुरी गतिविधियों से रोका जा सके।

जब ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना गये तो यहां आपने मदीना के यहूदियों और ईसाइयों के साथ मानवीय भाईचारा की बुनियाद पर मीसाके मदीन (संधि) तैयार कराया जिसमें यह उल्लेख है कि हम सब एक साथ मिल कर भाई चारा और सौहार्दपूर्ण जीवन गुज़ारें गे फिर बाद के काल में भी यह सिलसिला जारी रहा। जहाँ भी मुसलमान सत्तासीन रहे अपने गैर मुस्लिम भाइयों के साथ समता का व्यवहार करते रहे। मिस्र, शाम, सीरिया और इराक में यहूदी और ईसाई वर्ग पूरी आज़ादी के साथ रहते रहे हैं। इण्डोनेशिया में मुसलमानों की बड़ी मात्रा और उनका शासन है यहां भी ईसाई पूरी आज़ादी के साथ रहते हैं, भारत में मुसलमानों के शासन काल में गैर मुस्लिमों की धर्मशालाएं और ईसाइयों के गिर्जाघरों को सुरक्षा प्राप्त था और सब लोग अम्न व सुकून के साथ जीवन यापन करते रहे।

हिन्दुस्तान से हमारा प्रेम प्राकृतिक है हम इस देश से टूट कर प्रेम करते हैं इसलिये कि जहां इन्सान पैदा होता है, पलता बढ़ता है उसको उस नगर और देश से स्वभाविक प्रेम होता है जब वह अपने वतन को छोड़ता है तो उसकी आखें डबडबा जाती हैं और जब वह वतन वापस होता है तो उसके दिल खुशी से झूम जाते हैं, इस्लाम धर्म इस प्रेम-भाव का भरपूर समर्थन करता है वह एक जिम्मेदार नागरिक बनकर जीवन बसर करने की शिक्षा देता है, वतन दोस्ती के आदाब सिखाता है।

हमारा यह देश और इस देश का इतिहास गवाह है कि अंग्रेज़ों के शातिर पंजों, अपवित्र उददेश्यों, संगीन मंसूबों से प्रिय देश की सुरक्षा के लिये देश के लिये प्राण न्योछावर करने वालों ने अपनी जानों की कुर्बानी दी, ज्यालों ने अपने सुख चैन को न्योछावर किया फिर आज़ादी का सूरज उदय हुआ। हमारे पूर्वजों ने हमारे भविष्य के बारे में यह फैसला किया कि अब हम यहां से कहीं नहीं जायेंगे यहीं जियेंगे यहीं मरेंगे इतिहास गवाह है कि देश विभाजन के अवसर पर एक खानदान यहां से प्रवास करने जा रहा था उसे जमाअत अहले हदीस के एक महान सपूत, राष्ट्रीय सदभावना के ध्वजा वाहक और स्वतंत्रता संग्राम के सिपह सालार मौलाना अबुल कलाम आजाद ने रोकते हुए कहा था ''तुम इस देश को छोड़ कर कहाँ जा रहे हो, यहां से जाने से पहले तुम ने इस बात का इतमिनान हासिल कर लिया कि तुम्हारे बाद यहां की बेशुमार (असंख्य) मस्जिदों, अनगिनत मदर्सों का क्या होगा, हमारे पूर्वजों ने यहां जो सरमाया (पूंजी) छोड़ी जो धार्मिक एवं ज्ञानात्मक विरासत हमारे हवाले किया तो इसको किस के हवाले करके जा रहे हो।''

हिन्दुस्तान से हमारा प्रेम प्राकृतिक है हम इस देश से टूट कर प्रेम करते हैं इसलिये कि जहां इन्सान पैदा होता है, पलता बढ़ता है उसको उस नगर और देश से स्वभाविक प्रेम होता है जब वह अपने वतन को छोड़ता है तो उसकी आखें डबडबा जाती हैं और जब वह वतन वापस होता है तो उसके दिल खुशी से झूम जाते हैं, इस्लाम धर्म इस प्रेम-भाव का भरपूर समर्थन करता है वह एक जिम्मेदार नागरिक बनकर जीवन बसर करने की शिक्षा देता है, वतन दोस्ती के आदाब सिखाता है।

यह वही मौलाना आज़ाद हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन आज़ादी हासिल करने में खपाया वह स्वतंत्रता संग्राम के अगुवा ही नहीं बल्कि हिन्दू मुस्लिम एकता के ध्वजावाहक और प्रतीक थे उनके जीवन के किसी भी मोड़ पर हिन्दू मुस्लिम एकता के जजबे मे कोई कमी नहीं आयी बल्कि जैसे जैसे जमाना गुज़रता गया वह इस एकता के और ज़्यादा पक्षधर और वाहक बनते गये।

मौलाला अबुल कलाम आज़ाद ने १५ दिसम्बर १९२३ ई० को कांग्रेसे के स्पेश्ल सत्र से संबोधित करते हुय कहा था ''आज अगर एक फरिश्ता आस्मान की बुलन्दियों से उतर आये और दिल्ली के कुतुब मीनार पर खड़े होकर यह एलान कर दे कि स्वराज २४ घण्टे के अन्दर मिल सकता है शर्त यह है कि हिन्दुस्तान हिन्दू मुस्लिम एकता से दस्तबरदार (विरक्त) हो जाये तो मैं इस आज़ादी से दस्तबरदार हो जाऊंगा मगर मैं इस हिन्दू मुस्लिम एकता से दस्त बरदार नहीं हूंगा क्योंकि अगर आज़ादी मिलने में देरी हुयी तो

यह हिन्दुस्तान का नुक्सान हो गा लेकिन अगर हमारी एकता जाती रही तो आलमे इंसानियत (पूरी मानवता) का नुकसान होगा। (मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और कौम परस्त मुसलमानों की सियासत पृष्ठ ४६)

इस महान विद्वान सूक्ष्मदर्शी, कुरआन के व्याख्याकार, निडर लेखक, कौम व मिल्लत के चिंतक ने हिन्दुस्तानी जनता के लिये प्रेम सौहार्द, और आपसी एकता का सन्देश देते हुये कहाः

हिन्दुस्तान के मुसलमानों का यह फर्ज शरई (इस्लामी कर्तव्य) है कि वह हिन्दुस्तान के हिन्दुओं के साथ अहद व मुहब्बत का पैमान बांध लें और उनके साथ मिल कर एक नेशन हो जाये मैं मुसलमाना भाइयों को यह सुनाना चाहता हूं कि खुदा की आवाज के बाद सबसे बड़ी जो आवाज़ हो सकती है वह मुहम्मद स०अ०व० की आवाज़ है, इस वजूदे मुकद्दस ने अहद नामा (संधिपत्र) लिखा जिसके शब्द यह हैं। ''इन्नहू उम्मतुन वाहिदतुन'' हम इन तमाम कबीलों से जो मदीना के अतराफ में बसते हैं सुलेह करते हैं, इत्तेफाक करते हैं और हम सब मिल कर एक उम्मते वाहिदा बनना चाहते हैं''। (खुतबाते आज़ाद भाग १ पृष्ठ ५०)

मौलाना आज़ाद की यह प्रभावी आवाज़ मुसलमानों के दिलों में

मौलाला अबुल कलाम आज़ाद ने १५ दिसम्बर १९२३ ई० को कांग्रेसे के स्पेश्ल सत्र से संबोधित करते हुय कहा था ''आज अगर एक फरिश्ता आस्मान की बुलन्दियों से उतर आये और दिल्ली के कुतुब मीनार पर खड़े होकर यह एलान कर दे कि स्वराज २४ घण्टे के अन्दर मिल सकता है शर्त यह है कि हिन्दुस्तान हिन्दू मुस्लिम एकता से दस्तबरदार (विरक्त) हो जाये तो मैं इस आज़ादी से दस्तबरदार हो जाऊंगा मगर मैं इस हिन्दू मुस्लिम एकता से दस्त बरदार नहीं हूंगा क्योंकि अगर आज़ादी मिलने में देरी हुयी तो यह हिन्दुस्तान का नुक्सान हो गा लेकिन अगर हमारी एकता जाती रही तो आलमे इंसानियत (पूरी मानवता) का नुकसान होगा।

घर कर गयी, उतर गयी, और तमाम संजीदा और शान्ति पसन्दों ने इस पर अमल किया और हर शहर गांव हर मिंबर और मेहराब से इसकी बाजगश्त (प्रतिध्वनि) सुनाई दी जाने लगी।

आज ज़रूरत है कि इस देश की तमाम कल्याणकारी संस्थाएं, संगठन, ओलमा, इमाम, मीडिया से समबद्ध लोग आगे आयें और गंभीरता से गौर करें कि प्रिय देश से गरीबी का अंत कैसे किया जा सकता है शिक्षा दीक्षा का मैदान कैसे विस्तृत किया जा सकता है? एक दूसरे के दिल में सम्मान, परस्पर प्रेम का भाव कैसे जागृत किया जा सकता है। अगर वतन के यह जियाले आगे आयें गे तो नफ़रत दुश्मनी, और फ़साद प्यार व मुहब्बत और सौहार्द में बदल जायेगी।

विशेष रूप से वह लोग जो कौमों के नेतृत्व का बेड़ा उठाये हुये हैं, मस्जिदों के इमाम हैं, वह अपने दावती कामों में समाजी, कल्याणकारी काम, सांप्रदायिक सदभावना की स्थापना के लिये प्रयास करें समुदायिक और मानवीय हमदर्दी को शामिल करें, अपने दिल में मानवता प्रेम का चिराग जलायें, अपने अन्दर मानव सेवा की ऐसी तड़प मौजूद हो कि समाज का हर व्यक्ति अपना हमदर्द समझे और हम ''खैरे उम्मत'' सब से बेहतरीन समुदाय कहलाये जाने का पात्र बन सकें। **(जरीदा तर्जुमान १६-३१ मार्च २०१७)**

आत्मघाती हमलों के बारे में इमाम मुहम्मद बिन सालेह अल उसैमीन रह० का जवाब

जो लोग धमाकू समान इंसानों के पास ले जा कर ध ामाका कर देते हैं तो यह आत्महत्या के अंतर्गत आता है और जो अपने आप को कत्ल करे वह हमेशा के लिये जहन्नम में दाखिल होगा। इस का सुबूत और दलील सहीह बुखारी में मौजूद है। दूसरे यह कि जब आत्मघाती हमला करने वाला सौ दो सौ लोगों को मार डालता है तो इस से इस्लाम को कोई फाइदा नहीं पहुँचता है। मरने वाले इस्लाम से लाभान्वित भी नहीं हुये और मर भी गये इस तरह की कारवाई से गैरों के अंदर प्रतिशोध की भावना पैदा होती है जिस की वजह से मुसलमानों को पकड़ते और क़त्ल करते हैं।

फिलिस्तीनियों के साथ यहूदियों के व्यवहार की मिसाल हमारे सामने है कोई एक या दो मरता है उस के बदले में दर्जनों पकड़ लिये जाते हैं इस में मुसलमानों को कोई फाइदा नहीं और न ही मरने वालों का कोई फाइदा हुआ।

कुछ लोग अपने आप को नाहक कत्ल करके जहन्नमी हो जाते हैं, ऐसा करने वाला शहीद नहीं हो सकता।

सवालः- आत्मघाती हम्ला करने वाले का क्या हुक्म है। क्या वह आत्महत्या का अपराधी है और हमेशा जहन्नम में रहेगा? क्या वह इसी तरीके से आखिरत में अपने आप को कत्ल करता रहेगा जिस तरह दुनिया में मरा है जैसा कि हदीसों में आता है?

जवाबः- जो कुर्आन की इस आयत ''और अपने आप को कत्ल मत करो अल्लाह तुम पर मेहरबान है'' (सूरः निसा) को पढ़ने के बावजूद आत्मघाती हम्ला करते हैं तो ऐसे लोगों पर आश्चर्य होता है। क्या ऐसा करने से उन को कुछ फाइदा हो सकता है? क्या दुशमन हार मान लेता है। इन धमाकों से दुश्मनी और बढ़ जाती है, यहूदी मुल्क की मिसाल हमारे सामने है जहाँ की एक पार्टी ने अर्बों को खत्म कर देने का मन बना लिया था।

जो लोग धमाकू सामान लेकर इंसानों के भीड़ में जा कर धमाका करते हैं तो यह खुदकुशी (आत्महत्या) है और जिस ने आत्महत्या की तो हदीस के अनुसार वह हमेशा के लिये जहन्नम में जायेगा। इस लिये कि उस ने इस्लाम की खातिर खुदकुशी नहीं की। उस के मरने से दस, सौ या दो सौ के मरने से इस्लाम का कोई फाइदा नहीं हुआ इस आत्मघाती हमले की वजह से दुश्मन मुसलमानों पर जानलेवा हमला करते हैं जैसा कि फिलिस्तीन में यहूदी कर रहें हैं। एक आदमी ६-७ लोगों की जान ले लेता है लेकिन इस के बदले में ६०-७० मुसलमान गिरफतार कर लिये जाते हैं इस से तो मुसलमानों का नुक्सान हुआ।

हमारी समझ से कुछ लोगों का यह काम सिर्फ और सिर्फ

आत्महत्या है ऐसा करने वाला हमेशा के लिये जहन्नम में जायेगा।

इस्लाम ने इंसानों के जान व माल और आबरू को महफूज कर दिया है उन की बेहुर्मती को सख़्ती के साथ हराम करार दिया है। नबी स० ने हज्जतुलविदा के मौके पर फरमाया था ''बेशक तुम्हारा खून तुम्हारा माल और तुम्हारी इज्जत एक दूसरे पर हराम है जिस तरह आज के दिन महीने की और मौजूदा शहर की हुर्मत है''। फिर आप स० ने फरमायाः ''क्या मैं ने अल्लाह का पैगाम पहुँचा दिया? ऐ अल्लाह तू गवाह रह'' आप स० ने फरमायाः ''हर इंसान के ऊपर दूसरे इंसान का खून, माल और इज्जत हराम है''। (मुस्लिम)नबी स० ने फरमायाः ''जुल्म से बचो इस लिये कि जुल्म कियामत के दिन की तारीकियों (अंधेरों) में से है'' (मुस्लिम)

अल्लाह तआला ने किसी बेकुसूर को मारने पर सख़्त सजा सुनाई है और मोमिन के बारे में अल्लाह तआला का फरमान हैः ''और जो शख्स मोमिन को जान बूझ कर कत्ल कर डाले तो उस का बदला जहन्नम है जिस में वह सदा रहेगा और अल्लाह का ग़ज़ब और लानत उस पर होगी और उस के लिये बड़ा अजाब तैयार है''। (सूरः निसा-९३)

जिम्मी को गलती से कत्ल के बारे में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''और अगर तुम्हारे मुआहिदा-दार हों तो उस के वारिसों को खूँ बहा देना और एक गुलाम मुसलमान का आजाद करना जरूरी है'' (सूरः निसा-९२)

जब जिम्मी के कत्ल के बदले में खूँबहा कत्ल के बदले मृतक के परिजनों को पैसा देना पड़ेगा और कफ्फारा अदा करना पड़ेगा तो जानबूझ कर कत्ल करना उस से भी बड़ा जुर्म और गुनाह है।

रसूल स० ने फरमाया ''जिस ने किसी मुआहदा-दार को क़त्ल किया वह जन्नत की खुश्बू नहीं पायेगा'' (बुखारी, मुस्लिम)

३:- सुप्रिम ओलमा कोंसिल एलान करती है कि इस गलत अकीदे का इस्लाम से कोई लेना देना नहीं है। बेकुसूरों का क़त्ल, माल को तबाह करना और इमारतों को उड़ाना ढ़ाना आदि मुज्रिमाना (अपराधिक) काम हैं जिन का इस्लाम से कोई संबन्ध नहीं है।

इसी तरह सच्चे पक्के मुसलमानों का इन गलत कामों से कोई संबन्ध नहीं है। यह सब बिगड़े अधर्म लोगों का काम है, इन का जुर्म इस्लाम और उसके अनुयायियों पर नहीं थोपा जायेगा। कुर्आन में अपराधियों के साथ रहने से भी रोका गया है। अल्लाह तआला फरमाता हैः ''और बाज लोग ऐसे हैं जिन की बातें तुझ को दुनिया में भली मालूम होती हैं और जो कुछ दिल में है उस पर अल्लाह को गवाह करता है हालाँकि वह तुम्हारा दुश्मन है। और जब फिर जाता है तो जमीन में दौड़ धूप करता है कि उस में फसाद फलाए औार खेतों को बर्बाद करे और चौपायों की नस्ल को मार दे। और अल्लाह फसाद को पसंद नहीं करता । और जब कोई उसे कहता है कि अल्लाह से डर तो अकड़खी की वजह से गुनाह पर अड़ जाता है, पस जहन्नम उस को काफी है'' (सूरः बकराः २०४-२०६)

सारी दुनिया के मुसलमानों पर यह जरूरी है कि वह एक दूसरे को ईमान और नेक अमल का उपदेश दें एक दूसरे का खैर खुवाह (शुभचिंतक) बनें, नेकी और

तक़्वा की बुनियाद पर सहयोग करें। भलाई का हुक्म दें और बुराई से रोकने की कोशिश करें अल्लाह तआला का फरमान हैः ''और नेकी और तक़्वा के कामों में एक दूसरे की मदद किया करो और गुनाह और जुल्म पर मदद न किया करो और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह बड़ा सख्त अजाब देने वाला है'' (सूरः माइदाः२)

अल्लाह तआला फर्माता है : ''मोमिन मर्द और औरतें एक दूसरे के रफीक़ (साथी संबन्धी) हैं। भले कामों का हुक्म करते हैं और बुरे कामों से रोकते हैं और नमाज पढ़ते हैं और ज़कात देते हैं उन्ही पर अल्लाह रहम करेगा बेशक अल्लाह बड़ा गालिब बड़ी हिक्मत वाला है''। (सूरः तौबाः७१)

अल्लाह तआला फरमाता है : ''कसम है जमाने की बेशक इंसान (सरासर) नुक्सान में है। लेकिन जिन लोगों ने ईमान कुबूल करके नेक अमल किये और दूसरे को हक पसन्दी की नसीहत करते रहे (वह नुक्सान और घाटे में नहीं) (सूरः अस्रः१-३)

रसूल स० का फरमान हैः ''दीन खैरखुवाही का नाम है, आप ने यही वाक्य तीन बार कहा। कहा गया किस के लिये ऐ अल्लाह के रसूल! आप स० ने फरमायाः अल्लाह के लिये, उस की किताब के लिये, उस के रसूल के लिये, मुसलमानों के एमाम और जनता के लिये''।

नबी स० ने फरमायाः ''मुहब्बत मेहरबानी में मुसलमानों की मिसाल उस जिस्म की तरह है कि जब उस के जिस्म के किसी हिस्से को कोई तक्लीफ पहुँचती है तो पूरा जिस्म बेखुवाबी और बुखार में तड़प उठता है'' (बुखारी, मुस्लिम)

इस मफहूम (भाव) की बुहुत सी आयतें और हदीसें हैं।

अल्लाह तआला तमाम इंसानों की कठिनाइयों को दूर करे तमाम शासकों को भलाई की तौफ़ीक दे और तमाम मुसलमानों की हालत दुरूस्त फरमाये। अल्लाह ही हर चीज़ पर क़ादिर है।

२. गुमराह लोगों की हिदायत के लिये दुआ की जाये अगर वह नसीहत के मुहताज हैं तो उनको नसीहत की जाये, अगर कोई भ्रम है तो उसको दूर किया जाये। ऐसी सूरत में संभव है कि अल्लाह उनको हिदायत दे दे। जिस तरह इब्ने अब्बास की कोशिशों से कुछ बागी लोगों को हिदायत मिली थी। इस तरह के फित्नों के वक्त अल्लाह से दुआ करनी चाहिये क्योंकि अल्लाह ही हिदायत और निजात देने वाला है। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल भी अपनी दुआ में कहते थे ऐ अल्लाह! मुझे उन मामलों में रहनुमाई फरमा जिसमें लोग तेरे हुक्म से इख्तिलाफ करते हैं बेशक जिसे तू चाहे सीधे रास्ते की हिदायत देता है तो फिर हमारी क्या हैसियत है हमें भी अल्लाह से दुआ करनी चाहिये। हम अपने लिये भी दुआ करें और ऐसे शख्स के लिये भी दुआ करें जिस के बारे में मालूम हो कि वह सहीह रास्ते से हट गया है या गुमराह हो गया है या किसी के दीन और इज्जत पर हमला करता है या कोई गलत बात करता है। ऐसे मौके पर सब्र की जरूरत है। क्योंकि मखलूक की इस्लाह करना जिंदगी का अहम मकसद है।

सवाल- कुछ लोग इंसानों के खिलाफ हिंसा को जाइज (वैध) समझते हैं। इस बारे में आप की क्या राय है?

जवाबः- यह तरीक़ा गलत है क्योंकि इस्लाम हिंसा का विरोधी है। अल्लाह तआला फरमाता हैः ''अपने पर्वरदिगार की राह की तरफ होशियारी और बेहतरीन नसीहत से लोगों को बुलाता रह और (बहस) की नौबत आये तो बड़े अच्छे ढंग से उनके साथ बहस किया कर। (सूरः नहल १२५)

अल्लाह तआला ने मूसा और हारून अलैहि० से फिरऔन को समझाने का तरीका बताते हुये फरमाया ''पस जा कर उससे नर्म बात करना शायद वह समझ जाये या डर जाये। (सूरः त्वाहा-४४)

हिंसा का मुक़ाबला हिंसा से करने से उल्टा नतीजा सामने आता है, इंसानों का नुक्सान होता है। हिंसा और सख्ती का बर्ताव इस्लामी शिक्षा के खिलाफ है। मुसलमानों को नबी और कुर्आनी तालीम को अपनाना चाहिये।

उपर्युक्त कुर्आनी आयात, अहादीस सहाबा और शोधकर्ता ओलमा के बयानात को जब कोई इंसाफ पसंद सुन और पढ़ ले गा तो उसे इस बात का यकीन हो जायेगा कि उसका कोई कर्म या बात अल्लाह से छिपी हुयी नहीं है और अल्लाह के सामने जवाबदेह (उत्तरदायी) है लेकिन जो हठधर्म होगा उसके बारे में क्या कहा जा सकता है। हम अल्लाह से तमाम इंसानों की भलाई चाहते हैं वही इसका मालिक और इस पर कादिर है।

''आतंकवाद के विरोध में अहले हदीस ओलमा के फ़तावे'' प्रकाशक : मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

(प्रेस रिलीज़)

अमन व शान्ति, उदारता, राष्ट्रीय सदभावना आपसी भाई चारा वक्त की सबसे बड़ी आवश्यकताः

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

दिल्ली २९ दिससंबर २०१७

इस्लाम अम्न व शान्ति का धर्म है वह उदारता, राष्ट्रीय सदभावना और भाई चारा को बढ़ावा देने वाला धर्म है। इस्लाम दया करूणा वाला धर्म है वह हर कौम, राष्ट्र में और पूरी मानवता के लिये अम्न व शान्ति चाहता है और इस्लाम और मुसलमानों की तारीख अम्न व शान्ति, उदारता और आपसी भाई चारा की रही है। कुरआन और हदीस में जगह जगह नर्म दिली और दया करूणा की शिक्षा दी गयी है।

कुरआन और हदीस की शिक्षाओं को मजबूती से थामने से ही इन तमाम चीज़ों का दौर दौरा होगा। यह उदगार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने नद्वतुल मुजाहिदीन के द्वारा आयोजित चार दिवसीय आल केरल कांफ्रेन्स के उदघाटन सत्र से संबाधित करते हुये व्यक्त किया।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के सम्माननीय अमीर ने महत्वपूर्ण समाजी राजनीतिक और ज्ञानात्मक हस्तियों की मौजूदगी में संबोधित करते हुये कहा कि हर मुसलमान अपने काम की शुरूआत बिस्मिल्लाहिर्रहमार्निहीम के द्वारा करता है जिसमें दया करूणा की शिक्षा दी गयी है। उन्होंने कहा कि हम इस कांफ्रेन्स की शुरूआत उस पालनहार के नाम से कर रहे हैं जिसके नाम में अम्न व शान्ति की दुआ है और उसके नाम का मतलब ही अम्न व सुरक्षा है। उन्होंने कहा कि हम उस अल्लाह के नाम से इस कांफ्रेन्स की शुरूआत कर रहे हैं जिसके जरिये हम दारूस्सलाम अर्थात जन्नत में दाखिल होना चाहते हैं और सलाम सलाम जन्नत वालों का कलाम है।

उन्होंने कहा कि मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द देश में अम्न व शान्ति को बढ़ावा देने के लिये प्रयासरत है और आतंकवाद के खिलाफ हर महाज़ पर आवाज़ बुलन्द कर रही है। कांफ्रेन्सों, सेमीनारों, सिम्पोज़ियम, फ़तवे और अन्य साधनों के द्वारा आतंकवाद और दाइश जैसे आतंकी संगठनों की विनाशकारी गतिविधियों की कड़े शब्दों में निन्दा करती रही है।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के सम्माननीय अध्यक्ष ने कहा कि इस्लाम का इतिहास उदारता और भाई चारा का रहा है। ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० सुलह समझौता और अम्न व शान्ति की अहमियत और उसके लाभ और दूसरों के साथ उदारता की ज़रूरत को स्पष्ट करते हुये कहा था कि अगर आज भी कोई हिलफुल फजूल जैसे समझौते (संधि) की बात करता है तो हम इस प्रकार की संधि में शामिल होने के लिये तैयार हैं सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद

स०अ०व० ने हलफुल फजूल में शामिल हो कर यह सन्देश दिया है कि जब अम्न व शन्ति की बात आये और मानवता के कल्याण की बात हो तो हम तमाम मुसलमानों को इसमें आगे आगे रहना चाहिये। उन्होंने कहा कि इस्लाम और मुसलमानों के उदारता की सबसे उज्जवल मिसाल सुलेह हुदैबिया भी है जिसमें ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० और आपके प्यारे साथियों ने आदर्श उदारता का प्रदर्शन किया है।

हमारे पूर्वजों में मौलाना कलाम आज़ाद, सैयद अहमद खान, सैयद नज़ीर हुसैन देहलवी रह० और तमाम ओलमा, सुधारक अपने जमाने में अम्न व शान्ति, भाई चारा, राष्ट्रीय सदभावना और उदारता के ध्वजावाहक रहे हैं और कांफ्रेन्स और अन्य पलेट फार्मों से हमने राष्ट्रीय सदभावना का ज्यादा से ज्यादा सुबूत और बढ़ावा दिया है।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली के जारी किये गये प्रेस रिलीज के अनुसार इस चार दिवसीय आल केरल कांफ्रेन्स में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधमण्डल ने शिर्कत की। इस कांफ्रेन्स से मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कोषाध्यक्ष हाजी वकील परवेज और अन्य धर्मों के धर्म गुरूओं में स्वामी अग्निवेश और पूर्व केन्द्रीय कानून मंत्री श्री सलमान खुर्शीद आदि ने संबोधित किया। इस कांफ्रेन्स में केरल असम्बली के बाज सदस्यों और मंत्री और विभिन्न धर्मों के लोगों ने भाग लिया। यह कांफ्रेन्स चार दिन तक जारी रहेगी।

(जरीदा तर्जुमान १६-३१ जनवरी २०१८)

पाठक गण ध्यान दें

१-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। २-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सुचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। ३-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। ४-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। ६- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। ७. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

नाप तौल में कमी का परिणाम

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:''उन कम देने वालों के लिये अफसोस है जो लोगों से लेते समय तो पूरा पूरा (बल्कि दांव चले तो ज्यादा भी) लेते हैं और जब नाप या वजन से देते हैं तो कम देते हैं, क्या यह लोग जानते नहीं कि वह एक बड़े दिन में (जो हिसाब का दिन है) उठाये जायें गे जिस दिन सब लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे। बदकारों के बुरे आमाल ''सिज्जीन'' में हैं''। (सूरे ततफीफ-१-७)

इब्ने माजा में हरजरत इब्ने अब्बास रजिअल्लाहो तआला से रिवायत है कि नबी स० जब मदीना आये उस समय मदीना वाले नाप तौल में अच्छे नहीं थे। जब यह आयत नाज़िल हुयी तो उन्होंने अपने नाप तौल दुरूस्त कर लिये। अन्य रिवायतों के अनुसार मदीना में अबू जुहैना नामी एक दुकानदार दो प्रकार के माप (बांट) रखता था। एक से माल लेता और एक से माल देता था इसके बारे में यह आयत नाज़िल हुयी। हदीस शरीफ में है कि जो लोग नाप तौल में कमी ज़्यादती करेंगे उन पर सूखा काल आयेगा (वहीदी)

जिस दिन अल्लाह के सामने खड़े होंगे तो कानों तक पसीने में डूबे होंगे। एक रिवायत में है कि लोगो उस दिन तुम्हारा क्या हाल होगा जब अल्लाह तुमको इस तरह इकटठा करेगा, जैसे तीर तरकश (तूणीर, निषंग) में जमा किये जाते हैं वह पचास हज़ार वर्ष तक तुम्हारी तरफ देखे गा भी नहीं लेकिन मोमिनों पर यह दिन आसानी से गुज़र जायेगा। हज़रत इब्ने मसऊद रजिअल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं कि चीलीस वर्ष तक लोग बराबर खड़े रहेंगे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो ने जब यह आयत पढ़ी तो मारे डर के जोर जोर से रोने लगे। मुस्नद अहमद की एक रिवायत में है कि उस दिन अल्लाह की महानता और प्रताप के सामने सब खड़े कांप रहे होंगे। दूसरी हदीस में है कि उस दिन बंदों से सूरज इतना करीब हो जायेगा कि एक या दो नेजे के बराबर ऊंचा रहेगा और सख्त तेज होगा हर शख्स अपने कर्मपत्र के अनुसार पसीने में डूबा होगा।

सिज्जीन अत्यंत सख्त मुसीबत और परेशानी का स्थान है और यह स्थान सातों जमीन के नीचे है। ''कल्ला बलरा-न'' की व्याख्या में तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में बयान है कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फ़रमाया बन्दा जब गुनाह करता है तो उसके दिल पर एक काला बिन्दु (नुक्ता) बन जाता है अगर तौबा (क्षमा याचना) कर लेता है तो उसकी सफाई हो जाती है और अगर गुनाह करता है तो वह बिन्दु और फैल कर बड़ा हो जाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि गुनाह पर गुनाह करते रहने से दिल अन्धा और मुर्दा हो जाता है ऐसे लोग हश्र (महा प्रलय) के दिन अज़ाब में गिरफतार होकर अल्लाह को न देख पायेंगे जबकि ईमान वाले अल्लाह को देख सकेंगे।

(सनाई तर्जुमा व मुन्तखब हवाशी वाला हिन्दी कुरआन मजीद से , प्रकाशक मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द)

राष्ट्रीय सदभावना को बढ़ावा देने में प्रचारकों एवं सुधारकों की भूमिका

अब्दुल मुबीन फैज़ी

राष्ट्रीय सदभावना की संभावनाएं

हम जिस देश में रहते हैं यह निसन्देह संसार का अधिक आबादी वाला देश है और यहां के वासियों की तादाद सवा सौ करोड़ से अधिक है और यही नहीं बल्कि यहां बसने वाले लोग बहुत से धर्मों से संबन्ध रखने वाले हैं उनकी उपासना के तरीके अलग अलग, रहने सहने का तरीक़ा अलग, शादी विवाह की रस्म व रीति अलग यहां तककि उनमें मरने के बाद अपने मुर्दों के अंति संस्कार के तरीके भी विभिन्न हैं, कोई अपने मुर्दे को जमीन में दफन करता है तो कोई इन्हें जलाता है तो कोई किसी और तरीके से अपने मुर्दों का अंति संस्कार करता है, इसी प्रकार उनकी भाषाएं अलग अलग, उनकी सभ्यता भी एक दूसरे से विभिन्न यहां तक कि उनके पहनावे ओढ़ावे भी एक दूसरे से अलग होते हैं लेकिन इनसब के बावजूद इन सभी वासियों के बीच जो संयुक्त चीज पायी जाती है वह यह है कि उनमें से हर एक के अन्दर देश से अत्यंत प्रेम है और इनमें से हर एक अपने प्रिय देश और देश की सुरक्षा के लिये अपना सब कुछ कुर्बान करने का जजबा रखता है। हर एक अपने देश को विकास के चरम पर देखना पसन्द करता है यहां तक कि कोई वासी इस बात को पसन्द नहीं करता कि इस देश पर कोई दूसरी जगह से आ कर शासन करे और यहां के वासियों को गुलाम बना कर जीवन गुज़ारने पर मजबूर करे। यही वजह है कि आज़ादी से पहले इस देश से अंग्रेजी साम्राजी शासन के खात्मे के लिये जब आन्दोलन चला तो इस देश के वासी साधारणतयः बिना किसी भेद भाव के इसमें भाग लेते थे और अंग्रेज़ों के खिलाफ आदर्श एकता का सुबूत देते थे, अगर्चे इसके लिये उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ती थी लेकिन वह सब हंसी खुशी के साथ देश की आज़ादी के लिये यह सब कुछ सहन करते थे।

इसी प्रकार यहां के वासी साधारण सीधे सादे और सादगी पसन्द हैं क्योंकि इस देश की अधिकांश आबादी गांव में रहती बसती है और गांव के लोगों में मेल मुहब्बत संतोष और सादगी होती है वह बनावट के आदी नहीं होते इन तमाम चीज़ों को देखकर कहा जा सकता है कि यहां के वासियों (बाशिन्दों) में राष्ट्रीय सदभावना और आपसी एकता की संभावनाएं उज्जवल हैं क्योंकि यहां बसने वाले लोग

विभिन्न रीति रिवाज, सभ्यता के वाहक होने, अलग अलग धर्म एवं भाषा के ध्वजावाहक होने के बावजूद आपस में कुछ बुनियादी चीज़ों में संयुक्त समानता रखते हैं वह है देश से प्रेम, उनके विकास एवं उन्नति को देखने और आपस में मिल जुल कर रहने का जजबा, अम्न व शान्ति के साथ गैरों से आज़ाद हो कर जीवन गुजारने की लगन, तड़प, इसलिये इन चीज़ों की प्राप्ति के लिये सभी लोग एक दूसरे के साथ साझा कर सकते हैं और इसी का नाम राष्ट्रीय सदभावना है।

राष्ट्रीय सदभावना के लिये बुनियाद

अब सवाल यह है कि हमारे देश में बसने वाले असंख्य इन्सानों को एक लड़ी में पिरोने के लिये दूसरे शब्दों में राष्ट्रीय सदभावना के लिये बुनियाद किस चीज को करार दिया जाये? संभव है कि इस सवाल के जवाब में कुछ लोग इस प्रकार की बातें कहें कि यहां के वासी एक ही सभ्यता को अपना लें और उनकी जो अपनी धार्मिक पहचान है उसको खत्म कर लें या सभी लोग अपने अपने धर्म से विरक्त (दस्त बरदार) हो कर सेकुलर बन जायें या इसी प्रकार की कुछ और बातें कही जा सकती हैं लेकिन पहली बात तो यह है कि ऐसा संभव नहीं है क्योंकि इन्सानों का धर्म से संबन्ध ा इतना कमोर नहीं होता कि इस को इतनी आसानी से छोड़ा जा सके।

अब सवाल यह है कि हमारे देश में बसने वाले असंख्य इन्सानों को एक लड़ी में पिरोने के लिये दूसरे शब्दों में राष्ट्रीय सदभावना के लिये बुनियाद किस चीज को करार दिया जाये? संभव है कि इस सवाल के जवाब में कुछ लोग इस प्रकार की बातें कहें कि यहां के वासी एक ही सभ्यता को अपना लें और उनकी जो अपनी धार्मिक पहचान है उसको खत्म कर लें या सभी लोग अपने अपने धर्म से विरक्त (दस्त बरदार) हो कर सेकुलर बन जायें या इसी प्रकार की कुछ और बातें कही जा सकती हैं लेकिन पहली बात तो यह है कि ऐसा संभव नहीं है क्योंकि इन्सानों का धर्म से संबन्ध ा इतना कमोर नहीं होता कि इस को इतनी आसानी से छोड़ा जा सके।

दूसरी बात यह है कि अगर इसानों से जबरदस्ती इस प्रकार की मांग की जाये और उनमें से कुछ लोग बिना इच्छा या विवश्तापूर्वाक ऐसा कर भी लें कि अपनी पहचान खत्म कर लें या अपने धामकि कर्म छोड़ दें या जबरदस्ती अपने धर्म से दस्तबारदार हो जायें और केवल राष्ट्रीय सदभावना के लिये यह सब कुछ सहन कर लें और इसी बुनियाद पर राष्ट्रीय सदभावना को बढ़ावा दिया जाये तो मैं समझता हूं कि यह अत्यंत कमज़ोर आधार पर मकान निर्माण करने के समान हो गा और इस बारे में बिना झिझक यह कहा जा सकता है कि

जो शाखो नाजुक पे आशियाना बने गा नापायदार होगा

इस लिये अगर हम राष्ट्रीय सदभावना चाहते हैं तो इसके

लिये मजबूत बुनियाद की तलाश करें ताकि मज़बूत बुनियाद पर स्थापित होने वाला राष्ट्रीय सदभावना भी मज़बूत और ठोस हो और इसे कोई तेज़ हवा भी हिला न सके और इसके लिये सब से मज़बूत बुनियाद हमारे देश में पाये जाने वाले विभिन्न ध र्म ही बन सकते हैं क्योंकि लगभग सभी धर्मों में ऐसी शिक्षाएं हैं जिन को अगर सहीह अर्थों में अपना लिया जाये तो धर्म के मानने वालों से इनका कोई झगड़ा ही न हो। मिसाल के तौर पर सभी धर्म मानव जीवन के साध ाराण और बुनियादी मूल्यों पर सहमत हैं। मिसाल के तौर पर सभी धर्मों की बुनियाद सच्चाई, न्याय और वचन को पूरा करना है। सभी धर्म ईमानदारी को अच्छा और नेकी का काम करार देते हैं और इसे अपनाने का अपने अनुयाइयों को उपदेश देते हैं और अत्याचार, अन्याय, झूठ, दगा और धोका को बुरा समझते हैं, सभी धर्म हमदर्दी, दया, दानवीरता की कद्र करते हैं, स्वार्थ, सख्त दिली, और संकीर्णता को तुच्छ निगाह से देखते हैं, सब्र, संयम, नर्मी शालीनता सबके नजदीक खूबियां हैं, बेसबरी, दुष्टता, दुर्व्यवहार सबके यहां बुराई मानी जाती हैं, कर्तव्य निष्ठा, मेहनत, और दायित्व का एहसास सभी को प्रिय हैं, चोरी, काम चोरी, काहिली, लापरवाही सबके नजदीक अप्रिय हैं।

इसी प्रकार सभी धर्म समाजी जीवन के निर्माण के लिये सुशासन, डिसीपिलिन, सहयोग, परस्पर मदद, प्रेम, शुभचिंतन को जरूरी करार देते हैं, बिखराव, कुशासन, बदखुवाही (दुर्भावना) और अत्याचार एवं अन्याय को घातक करार देते हैं। चोरी व्यभिचार, नाहक कत्ल, डाका, जालसाजी, रिश्वतखोरी और घोटाले सबके नजदीक बड़े अपराध हैं, बदजुबानी, अपशब्द, दुख देना, चुगल खोरी, डाह और झूठे आरोप सबके यहां महा पाप हैं।

हर धर्म का उददेश ऐसे लोगों को तैयार करना है जो निष्ठावान, पवित्र, नर्म स्वभाव, और एक दूसरे के शुभचिंतक हों जो अपने हक पर संतुष्ट और दूसरे के अधिकारों को देने में दानवीर हों जो स्वयं शान्ति से रहें और दूसरों को भी सुख शान्ति से रहने देने के पक्षधर हों।

मानव जीवन और समाज के यह मूल्य किसी धर्म के साथ विशेष नहीं, हर धर्म की समान विरासत है और हर धर्म इस बारे में एक व्यापक दृष्टिकोण रखता है कोई धर्म इन मूल्यों के बारे में अपनों और अन्य के बीच भेदभाव नहीं रखता, कोई धर्म यह नहीं कहता, कोई धर्म यह नहीं सिखाता कि न्याय, शुभचिंतन, हमदर्दी और प्रेम तो केवल अपने सहधर्मियों के साथ की जाये। कोई धर्म यह नहीं कहता कि अपने गुट के जान व माल आदर, सम्मान की सुरक्षा की जाये और दूसरे गुटों का माल लूटा जाये, उनकी जायदाद को हड़प लिया जाये, उनके घरों को आग लगायी जाये, उनके जवानों और बच्चों को कत्ल किया जाये उनकी औरतों का अपमान किया जाये। इसकी इजाजत कोई भी धर्म नहीं देता है। (जारी)

जरीदा तर्जुमान १६-३१ मार्च २०१७

(प्रेस विज्ञप्ति)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के द्वारा

''विश्व शान्ति की स्थापना और मानवता की सुरक्षा''

के शीर्षक से भव्य ३४वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स ९-१० मार्च को

दिल्ली १२ जनवरी २०१८

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की प्रेस रिलीज के अनुसार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ३४वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स दिल्ली के राम लीला मैदान नई दिल्ली में शुक्रवार- शनिवार दिनांक ९-१० मार्च २०१८ को ''विश्व शान्ति और मानवता की सुरक्षा'' के शीर्षक से आयोजित होगी। इस्लाम के मानवता और शान्ति सन्देश को जानने, साधारण करने, आतंकवाद, दाइश और अन्य आतंकी संगठनों की संगीनी और षड़यंत्र को समझने और उनके खिलाफ जागरूकता पैदा करने, इस्लामी उदारता, सांप्रदायिक एकता एवं सदभावना के विकास में यह कांफ्रेन्स सहायक साबित होगी। इसके अतिरिक्त मदिरापान और अन्य मादक पदार्थों के सेवन, दहेज जैसी समाजी बुराईयों, जुवा, रिश्वत अज्ञानता, व भुकमरी समाज के लिये चुनौती बनी हुयी हैं। आधुनिक काल में प्रदूषण और इसके परिणाम स्वरूप बढ़ते हुये टमपरेचर और पानी की किल्लत की आशंकाओं की समस्साएं भी कम चिंता की बात नहीं, इनसे पूरी मानवता परेशान और दुनिया की सभी सृष्टि इसकी खतरनाकियों के नरगे में है, देश व समुदाय और मानवता के समक्ष उपर्युक्त समस्याओं का समाधान पेश करने और इनके बारे में जन जागरूकता लाने के लिये कांफ्रेन्स में विभिन्न प्रोग्राम आयोजित होंगे। कांफ्रेन्स में देश विदेश के प्रसिद्ध ओलमा, चिंतक और धार्मिक एवं समाजी महत्वपूर्ण हस्तियां भाग ले रही हैं जिनके उपर्युक्त विषयों एवं समस्याओं पर संबोधन, लेख और कवताओं से कांफ्रेन्स में भाग लेने वाले लाभान्वित होंगे। आशा है कि कांफ्रेन्स में देश के कोने कोने से बिना भेदभाव हर धर्म व मत के लोग बड़ी तादाद में भाग लेंगे और अपनी धार्मिका पहचान, इस्लामी भाईचारा और जमाअती लगाव के साथ भाग ले कर अम्न व शान्ति, मानवता, राष्ट्रीय सदभावना और परस्पर मेल मिलाप के इस्लामी सन्देश को साधारण करेंगे।

इस समय देशीय, एवं विश्व स्र पर मानवता की आत्मा से बेमेल दृष्टिकोण के कारण जिस प्रकार की बेचैनी पायी जा रही है इसने न केवल इस्लाम जगत बल्कि हर शुद्धबुद्धि रखने वाला इंसान चिंतित है और इसका ठोस समाधान चाहता है। इन हालात का तकाज़ा है कि हर शख्स इन्सान की हैसियत से

यथाशक्ति इसके लिये प्रयासरत रहे और सकारात्मक पहल करने वालों की आवाज़ में आवाज़ मिलाये इसी में पूरी मानवता और पूरे संसार की भलाई निहित है। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द जो देश समुदाय के संवेदन शील एवं सुलगती समस्याओं के समाधान के लिये हमेशा चिंतित रहती है और इसमें अपनी सकारात्मक भूमिका निभाने का निरन्तर प्रयास करती है इसके द्वारा इस शीर्षक पर कांफ्रेन्स का आयोजन इसी का परिणाम है आशा है कि इसके दूरगामी प्रभााव और परिणाम आयेंगे। स्पष्ट रहे कि इससे पहले मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द मानवता की समस्याओं के समाध ाान, मध्यमार्ग, पूर्वजों और इमामों का सम्मान जैसे मूल्यवान शीर्षक पर विभिन्न कांफ्रेन्स आयोजित करके सभी की तरफ से सराहना प्राप्त कर चुकी है।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली ने बताया कि उपर्युक्त उदगार सम्माननीय अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने पिछले दिन जमीअत के कार्यालय में आयोजित एक मीटिंग में व्यक्त किया। महा सचिव ने अधि ाकृत कहा कि कांफ्रेन्स की तैयारियां ज़ोरों पर हैं और जिम्मेदारान, सदस्यगण और कार्यकर्ता इस कांफ्रेन्स को सफल बनाने के लिये पूरे लगन से काम में व्यस्त हो गये हैं।

अहले हदीस कम्पलैक्स में
भव्य इमारत और आडीटोरियम
का निमार्ण कार्य शुरू

अहले हदीस कम्पलैक्स में भव्य इमारत, आडीटोरियम आदि के निर्माण का काम शुरू हो चुका है। आप सभी पाठकों और जमाअती मित्रों से अनुरोध है कि इस इतिहासिक और महान दीनी कार्य में भाग लेकर सहयोग करें और दुनिया व आखिरत में सवाब हासिल करें।

अहले हदीस कम्पलैक्स
D-254, अबुल फज़ल इन्कलेव, ओखला, नई दिल्ली–**25**

चेक या ड्राफ केवल : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

के नाम से बनवायें :A/c No.629201058685 (ICICI Bank) Chandni Chowk, Delhi-6

अपीलः- मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

फोन **011-23273407 011-23246613**

मानव अधिकार में समता

अबुल कैस अब्दुल अजीज़ मदनी

मां बाप, औलान, मियां बीवी, रिश्तेदार, पड़ोसी, यतीमों बेवाओं, ज़रूरतमन्दों और बीमारों के अधिकार बयान करने के साथ इस्लाम ने जानवरों, यहां तक कि नबातात (वनस्पति) के अधिकार का भी वर्णन किया, मानव समुदाय के अधिकारों का विस्तृत उल्लेख करते हुये सौहार्द, शुभचिंतन, और परस्पर सहयोग में मुस्लिम और गैर मुस्लिम के भेद भाव को मिटाया। कैदियों की मदद, गुलामों की आजादी, गरीबों की मदद पर सबसे ज्यादा जोर दिया और पूरी मानवता को उसका अधिकार दिया। इस्लाम चूंकि समता का ध्वजावाहक है इसलिये उसकी निगाह में सभी इन्सान बराबर हैं और सबको उसके अधिकार प्राप्त हैं। पूरी मानवता को इस्लाम ने जो अधिकार दिये हैं उनमें से कुछ महत्वपूर्ण अधिकारों की तरफ संकेत कर रहा हूं।

हर एक इन्सानी जान की सुरक्षा का हुक्म देते हुये फरमाया ''जो शख्स किसी को बगैर इसके कि वह किसी का कातिल हो या जमीन में फसाद मचाने वाला हो, कत्ल कर डाले तो गोया उसने तमाम लोगों को कत्ल कर दिया और जो शख्स किसी एक की जान बचा ले उसने गोया तमाम लोगों को जिन्दा कर दिया''। (सूरे माइदा-२०)

इस आयत में एक इन्सान के कत्ल को पूरी मानवता के कत्ल के समान कहा गया है और दूसरी तरफ एक इन्सान की जान बचाने को पूरी मानवता की जान बचाने के समान करार दिया गया है। हज्जतुल वेदाअ् के अवसर पर ईश्दूत हजरत मुहम्मद स० ने अपने संबोधन में फरमाया ''तुम्हारे प्राण, तुम्हारा माल, तुम्हारी इज्जत, वैसे ही सम्मान का दर्जा रखती है जैसे कि हज के इस दिन, महीने और मक्का का है।

अल्लाह ने हर इन्सान को विशेष सीमा के अन्दर अधिकार दिया है और इसी अधिकार की बुनियाद पर इसे दुनिया में भलाई करने, बुराई से बचने और रोकने, के लिये इस्लाम के कानून का पाबन्द बनाया और इस संसार के कर्म के अनुसार परलोक में बदले का पात्र करार दिया जीवन के हर भाग में एक ख़ास हद तक हर शख्स की व्यक्तगत आज़ादी को सुरक्षित रखा अतः हर इन्सान की व्यक्तगत आज़ादी उस समय तक सुरक्षित रखी जाये गी जब तक वह अपनी व्यक्तगत आज़ादी को दूसरों की आज़ादी छीनने या जमाअत के हित को ख़तरे में डालने के लिये प्रयोग नहीं करता। व्यक्तगत आज़ादी को सामूहिक हित के लिये न्योछावर कर दी जायेगी लेकिन व्यक्तगत आज़ादी के लिये सामूहिक आज़ादी या हित का

गला नहीं दबाया जा सकता।

इस्लाम ने हर इन्सान को ख्याल, आस्था और धर्म की आज़ादी देते हुये स्पष्ट शब्दों में कह दिया है कि ''धर्म के मामले में कोई जोर ज़बरदस्ती नहीं'' अल्लाह के इस फरमान के अनुसार हर शख्स को आज़ादी प्राप्त है कि वह जिस धर्म को अपनाना चाहे अपना सकता है लेकिन उसकी जवाबदेही उसके जिम्मे होगी और किसी धर्म को अपनाने का जिम्मेदार वह स्वयं होगा। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''और ऐलान कर दिजिये कि वह सरासर बरहक कुरआन तुम्हारे रब की तरफ से है अब जो चाहे ईमान लाये जो चाहे कुफ्र करे'' (सूरे कह्फ-२९)

कुरआन की एक दूसरी आयत में अल्लाह तआला ने फरमाया ''और अगर आप का रब चाहता तो पूरी धरती के लोग सबके सब ईमान ले आते तो क्या आप लोगों पर जबरदस्ती कर सकते हैं यहां तक कि वह मोमिन हो जायें हालांकि किसी शख्स का ईमान लाना अल्लाह के हुक्म के बगैर संभव नहीं''। (सूरे यूनुस ९८-९९)

इस प्रकार की आयतों की रोशनी में हर शख्स को इस बात की आज़ादी प्राप्त है कि या तो सीधे रास्ते को अपनाये या गलतआस्था अपना करके अलग अलग रास्तों में भटकता फिरे। किसी भी शख्स को कोई स्थायी आस्था या दृष्टिकोण कुबूल करने पर मजबूर नहीं कया किया जा सकता। इसी प्रकार इस्लाम अभिव्यक्ति का भी सबसे बड़ा समर्थक है यहां तक कि अगर कोई शख्स किसी शासक या बड़े जिम्मेदार को गलत काम पर देखे तो अपनी ताक़त और हालात के अनुसार उनको टोकने और रोकने का अधिकार प्राप्त है बल्कि किसी जालिम को अत्याचार से रोक देने के काम को उपासना करार देता है लेकिन इन्सानों के जान व माल, सम्मान और आस्था की सुरक्षा के लिये कुछ पाबिन्दयां भी लगाता है।

रंग, नस्ल, राष्ट्र और वतन की बुनियाद पर किसी भी इन्सान पर कोई वरीयता और वर्चस्व प्राप्त नहीं, बल्कि तमाम इन्सान एक दूसरे के बराबर हैं और बराबरी का अधिकार रखते हैं लेकिन संयम और दीनदारी की बुनियाद पर इन्सानों में वरीयता और अन्तर होगा।

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''तुम में अल्लाह के नजदीक सबसे बेहतर वह है जो अल्लाह से सबसे ज्यादा डरने वाला हो'' (सूरे हुजूरात-१३) कानूनी एतबार से हर इन्सान दूसरे के बराबर है और हर शख्स बिना भेद भाव के कानून के सामने उत्तरदायी है। इस बारे में ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स० का यह फरमान अतयंत स्पष्ट और सुप्रसिद्ध है। फरमाया ''अगर मुहम्मद की बेटी फातिमा चोरी करेगी तो उसका भी हाथ काटा जायेगा''। (सहीह बुखारी-११७०)

आर्थिक मैदान में कानून और अपनी ताकत और क्षमता की बुनियाद पर हर शख्स को कमाने धमाने का अधिकार और आज़ादी प्राप्त है। किसी पर अत्याचार

किये बिना या दूसरे को नुक्सान पहुंचाये बगैर अगर कोई शख्स आर्थिक साधनों को तलाश करता है तो यह उसका हक है लेकिन अत्याचार, जमाखोरी, लूट खिसोट, चोरी की इजाजत नहीं देता ताकि दूसरों के अधिकारों की भी सुरक्षा हो सके।

इस्लाम ने हर इन्सान को निजी संपत्ति का बुनियादी अधिकार भी दिया है और इसे आर्थिक मैदान में सुरक्षा प्रदान करते हुये आर्थिक गतिविधियों में भर पूर भाग लेने का आदेश दिया ताकि वह दूसरे का मोहताज न हो और किसी के सामने हाथ फैलाने की नौबत न आये। इस्लाम ने इन्सान को स्वयं अपने बल बूते पर जीने की शिक्षा देते हुये कहा ''और यह कि हर इन्सान के लिये केवल वही है जिसकी कोशिश स्वयं उसने की'' (सूरे नज्म-३९)

व्यक्तगत स्वामित्व का अधिकार देते हुये कहा ''मां बाप और खुवेश व अकारिब (रिश्तेदारों) के तर्के में मर्दों का हिस्सा भी है और औरतों का भी (जो माल मां बाप और खुवेश व अकारिब छोड़ कर मरें) चाहे वह माल कम हो या ज्यादा इसमें हिस्सा निर्धारित किया हुआ है (सूरे नेसा-७)

अल्लाह ने न्याय का हुक्म देते हुये फरमायाः ''बेशक अल्लाह न्याय और भलाई करने करने का हुक्म देता है'' (सूरे नहल-९०) और यह भलाई किसी एक कौम या कबीले के साथ विशेष नहीं है बल्कि यह न्याय और भलाई पूरी मानवता के लिये समान है। इस्लाम इन्सान तो इन्सान जानवर के साथ भी अच्छा व्यवहार और उसके साथ नर्मी करने का हुक्म देता है। दोस्त तो दोस्त दुश्मन के साथ भी न्याय करने का हुक्म दिया गया है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया किसी कौम से दुश्मनी तुम्हें इस बात पर न उभारे कि तुम इन्साफ न कर सको, इन्साफ किया करो जो परहेज़गारी के ज्यादा करीब है और अल्लाह से डरते रहो यकीन मानो कि अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है''। (सूरे माइदा)

इन्साफ के साथ इस्लाम ने दया एवं करूणा की भी शिक्षा दी है और यह जजबा किसी विशेष वर्ग या कौम के लिये विशेष नहीं बल्कि दया की भावना इन्सान के साथ जानवरों के साथ भी करने का हुक्म दिया और इस्लाम ने यह स्पष्ट किया कि सृष्टि के ऊपर दया करने की वजह से इन्सान अल्लाह के दया करूणा का पात्र बन जाता है। ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स० ने फ़रमाया ''तुम धरती पर बसने वालों पर दया करो आकाश वाला तुम पर दया करेगा''। (तिर्मिज़ी ११२४)

इन तमाम दलीलों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि संसार के तमाम इन्सान अपनी प्राकृतिक इच्छाओं और बुनियादी ज़रूरतों के एतबार से मानव एकता की लड़ी में पिरोये हुये हैं और हर इन्सान अपने जीवन के विभिन्न क्षणों और स्टेजों में दूसरे की मदद, सहयोग का मोहताज हुआ करता है। संसार के सभी शान्तिवादी इनसानों की यह इच्छा है कि संसार की सभी कौमें अपने संयुक्त हित में एकजुट हो जायें और अपने संयुक्त हितों की प्राप्ति

के लिये आपस में मिल जुल कर प्रयास करें, स्वयं भी सुख का जीवन गुजारें और दूसरों को भी जीवित और शान्तिपूर्ण रहने का अवसर प्रदान करें लेकिन संयुक्त हित की प्राप्ति के लिये विश्व समुदाय की स्थापना की संभावनायें और तरीके क्या होंगे इसका सहीह जवाब इस्लाम के अन्दर मौजूद है जो पूरी मानवा को वहदत (एकत्व) करार दे कर इसके लिये मजबूत और ठोस पहल किये जाने को जरूरी करार देता है।

जिस प्रकार अल्लाह अपनी पूरी सृष्टि के साथ दया का भाव रखता है यही भाव हर ंसान के अन्दर होना चाहिये जिस प्रकार अल्लाह के अवज्ञाकारी बन्दे उसकी नेमतों से लाभान्वित हो रहे हैं इसी प्रकार इन्सानों को भी अपने दुश्मनों से भी अच्छा व्यवहार करना चाहिये जिस प्रकार ईश्वर अपनी पूरी सृष्टि से प्रेम और लगाव रखता है इसी प्रकार हर इन्सान को दूसरे इन्सान से प्रेम और लगव रखना चाहिये, हर इन्सान से यही अपेक्षित है। **(जरीदा तर्जुमान १-१५ मार्च २००६ लेख का सारांश)**

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान को जो भी, थकान, बीमारी रंज व गम, तकलीफ पहुचती है यहां तक कि कांटा चुभता है तो अल्लाह इसकी वजह से उसके गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी-मुस्लिम)

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः बेशक अल्लाह बन्दे से खुश रहता है क्योंकि वह खाता है तो इस पर अल्लाह की हम्द बयान करता है और पानी पीता है तो इस पर भी अल्लाह की हम्द बयान करता है। (मुस्लिम)

अनस रजिअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः तुम में से कोई उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके बाप से उसकी औलाद से और तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब न बन जाऊं। (बुखारी, मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुझे जिब्रईल पड़ोसी के बारे में बराबर वसीयत करते रहे यहां तक कि मुझे यह यकीन होने लगा कि वह उसको वारिस बना देंगे। (बुखारी-मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रात में अपनी नमाज़ के आखिर में वित्र पढ़ो। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो लोग अल्लाह के घर में जमा हो कर अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं और एक दूसरे को सिखाते हैं तो अल्लाह उनपर अम्न व सुख नाजिल करता है और अल्लाह की रहमत उनको ढांप लेती है और फरिश्ते उनको घेर लेते हैं और अल्लाह उनका जिक्र करता है जो उसके पास होते हैं। (मुस्लिम २६९९)

जमाअती ख़बरें

● प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस तिलंगाना के सचिव हाफिज़ अब्दुल कैयूम की रिपोर्ट के अनुसार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली और मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कोषाध्यक्ष वकील परवेज़ के ८ दिसम्बर २०१७ को हैदराबाद आगमन के अवसर पर तीन दिवसीय प्रशिक्षणात्मक, संगठनात्मक और समाज सुधारक प्रोग्राम का आयोजन किया गया सम्माननीय अमीर ने जामियतुल मुफ्लिहात की जामा मस्जिद में फज्र की इमामत की और ज्ञानात्मक शैली में कुरआन का पाठ दिया, सम्माननीय अमीर ने मस्जिद मुहम्मदिया अहले हदीस लंगर हैदराबद में जुमा का खुतबा दिया और महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली ने मस्जिद अहले हदीस चंचल गौड़ा में जुमा का खुतबा दिया।

● इसी प्रकार से सम्माननीय अमीर और महा सचीव २१ अक्टूबर २०१७ को अल माहदुल इस्लामी रिच्छा बरैली गये जहां पर दोनों पदधारियों ने संस्था का निरीक्षण किया और कलास रूम वगैरह के सुशासन को देखकर हर्ष व्यक्त किया। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने ज्ञान की प्राप्ति के साथ सदस्यों और अध्यापकों की सेवाओं की प्रशंसा की और मेहनत व लगन से माहद की सेवा करने की प्ररेणा दी। महा सचिव ने ज्ञान की महत्ता पर संबोधन किया।

प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस दिल्ली की मीटिंग

प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस दिल्ली से जारी एक अखबारी बयान के अनुसार ३ दिसम्बर २०१७ को प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस की कार्य समीति की एक मीटिंग जमीअत अहले हदीस हिन्द दिल्ली के अमीर मौलाना अब्दुस्सतार सलफी की अध्यक्षता में अहले हदीस मंज़िल उर्दू बाज़ार जामा मस्जिद में आयोजित हुयी जिसमें सात जिलों से कार्य समीति के सदस्यों और जिलई जमीअत के पदधारियों ने भाग लिया। मीटिंग का आरंभ इस्माईल आज़ाद की तिलावत से हुआ। एजेण्डा के अनुसार जमीअत अहले हदीस दिल्ली के सचिव मौलाना मु० इरफान शाकिर ने पिछली कार्रवाई की रिपोर्ट पेश की जिस पर सदस्यों ने संतुष्टि और ख़ुशी व्यक्त किया। इस मीटिंग में दाइश और आतंकवाद की कड़ी निन्दा की गयी और आंकवाद को अमानवीय कृत्य करार दिया गया इस मीटिंग में जिन सदस्यों ने भाग लिया उनमें हाजी कमरूददीन, मौलाना मुहम्मद उमैर मदनी, इजीनियर अमानुलाह, मौलाना अशफाक रियाजी, मौलाना नदीम सलफी, मुहम्मद इस्राईल खान, डा० मुहम्मद शीस इदरीस तैमी, मौलाना मुहम्मद रईस फैजी, मुहम्मद साजिद मान, मुहम्मद मुकीम, मजाहिर अली, मुहम्मद फैयाज के नाम उल्लेखनीय हैं।

(जरीदा तर्जुमान-१-१५ जनवरी २०१७)

इस दुनिया से सबको जाना है

नौशाद अहमद

इब्ने मसऊद रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक यहूदी आलिम (धर्म ज्ञानी) ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और बोला ऐ मुहम्मद, हम अपनी किताब में पाते हैं कि अल्लाह सातों आसमानों जमीनों को एक ऊंगली पर और पानी को एक उंगली पर और कीचड़ को एक उंगली पर और समस्त सृष्टि को एक उंगली पर, फिर कहेगा मैं बादशाह हूं। फिर ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० मुस्कुराये यहां तक कि आप की दाढ़ दिखने लगी। उस (यहूदी धर्म ज्ञानी) की पुष्टि की फिर ईश्दूत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुरआन की यह आयत पढ़ी ''और उन्होंने अल्लाह को नहीं समझा जैसा कि समझना चाहिये और क्यामत (महा प्रलय) के दिन समस्त जमीन उसकी मुटठी में होगी''।

सहीह मुस्लिम की एक रिवायत में है कि पहाड़ और पेड़ एक उंगली पर होंगे फिर अल्लाह उन्हें बुलाकर कहेगा, कि मैं बादशाह हूं मैं माअबूद (पूज्य) हूं।

सहीह मुस्लिम की रिवायत में है इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला महा प्रलय के दिन सब आस्मानों को लपेट कर अपने दायें हाथ में लेगा फिर फरमायेगा, मैं बादशाह हूं कहां हैं अत्याचारी और घमंण्ड करने वाले, फिर सातों जमीन को लपेट कर अपने बायें हाथ में ले गा फिर फरमाये गा मैं बादशाह हूं, कहां हैं अत्याचार करने वाले, कहां हैं घमण्ड करने वाले?

जिस तरह मौत दुनिया की सबसे बड़ी सच्चाई है उसी तरह इस दुनिया के खत्म हो जाने की बात भी एक बहुत बड़ी सच्चाई है, यह आज़माइश की जगह है और इस लोक में कर्म का फल मिलेगा। इस दुनिया के खत्म हो जाने के बाद इन्सान का सामना एक ऐसी दुनिया से होगा जहां पर किसी भी प्रकार की कोई ताकत काम नहीं आयेगी, उस दिन दुनिया का बड़े से बड़ा दिमाग ईश्वर के सामने फेल हो जायेगा।

इस हदीस से यह मालूम हुआ कि यह दुनिया एक वक्ती चीज़ है और इसके बाद जो दुनिया वजूद में आयेगी वही शाश्वत जीवन हो गा इस लिये हर इन्सान को उस जीवन की तैयारी करनी चाहिये जहां पर हमेशा के लिये रहना है। इसलिये दुनिया में हमें ऐसे काम करने चाहियें जिससे हमारी सफलता का रास्ता खुलता हो और कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिये जो हमें नरक की तरफ ले जाता हो और दुनिया में अपमान का कारण बनता हो।